

SAMWAAD

Chetna Vikas Mulya Shiksha (CVMS) Cell

School of Consciousness Development &
Value Education

Faculty of Transformative Education (FoTE)



भूमि स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ॥



**DIVYA PATH
SANSTHAN**



**ATMIYA
UNIVERSITY**
RAJKOT, GUJARAT (INDIA)



**BRAHMA SWAROOP
HARI PRASAD SWAMIJI
MAHARAJ**

Swamiji Maharaj envisioned the Atmiya Group of Institutions as a center for nurturing enlightened, value-driven individuals through humanized education. He believed true education transforms character and builds a “human temple” of individuals guided by integrity, compassion, discipline & spiritual awareness.



**PRAGAT GURUHARI
PREMSWAROOP SWAMIJI
MAHARAJ**

Swamiji Maharaj, spiritually inspires Atmiya University to continue its mission of humanizing education by blending academic excellence with values, ethics & social responsibility. His inspiration encourages students to cultivate inner wisdom, discipline, compassion & a lifelong commitment to serve society with integrity and purpose.



**SWAMI SHREE
TYAGVALLABH SWAMIJI
MAHARAJ**

Swami ji emphasizes the university's commitment to value-based education, nurturing not only skilled professionals but also responsible and awakened individuals grounded in right understanding. He appreciates the CVMS Cell's initiative of launching this e-booklet on the wisdom of Jeevan Vidhya, encouraging readers to cultivate clarity, responsibility, mutual respect & harmonious living.

ARTICLE - 1



Mr. Ankit Kalariya,

JV Practitioner & Facilitator, CVMS
Cell, Atmiya University

“One-Day Value-Based Orientation Programme”

Vishwamangalam - Anera (Himmatnagar) successfully organized a **Value-Based Orientation Programme** for PTC girl students and staff members on **13th December 2025**, with the objective of sensitizing participants toward value-based living, right understanding, and holistic human development.

The programme witnessed enthusiastic participation from **150 PTC girl students and 20 faculty members**, reflecting a strong interest in understanding life beyond academic and professional dimensions. The session aimed to help participants explore the true meaning of development by examining the harmony between **right understanding, relationships and physical facilities**, as envisioned in Jeevan Vidya.

“पवित्र विचार ही मनोबल है”

Through simple, relatable examples drawn from daily life and an engaging question-answer format, the speaker enabled participants to introspect on fundamental issues such as life priorities, happiness, responsibility, and self-regulation.

The discussion addressed contemporary challenges faced by youth including stress, confusion regarding career and life goals, relationship conflicts, and societal pressures while offering clarity through the perspective of Madhyastha Darshan.

Students actively shared their experiences and reflected on how right understanding can lead to balanced decision-making, improved relationships, and responsible living.

The outcomes of the session were significantly positive. Participants reported enhanced clarity about life goals, improved awareness of values, and a deeper understanding of how internal harmony influences external success.

“मानव सही में एक तथा गलती में अनेक है”

Faculty members appreciated the relevance of Jeevan Vidya in nurturing emotionally stable, confident, and value-oriented learners.

Encouraged by the response and visible impact of the lecture, the management expressed keen interest in further strengthening this initiative.

It was unanimously agreed to organize a **7-Day Introductory Jeevan Vidya Shivir** in the near future, along with a **7-Day exclusive workshop for PTC students**, to facilitate deeper experiential learning and sustained reflection.

The organizing team expresses heartfelt gratitude to the management of Atmiya University, Rajkot, for their continued guidance, encouragement, and unwavering support. Their visionary leadership and cooperation play a pivotal role in promoting holistic, meaningful and value-based education aimed at the comprehensive development of youth.

“मानव सुख धर्मी है: समाधान = सुख । समस्या = दुःख”



डॉ. कैरवी राठौड़

जीवन विद्या अध्ययनार्थी एवं प्रैक्टिशनर,
CVMS Cell , आत्मीय विश्वविद्यालय

“चरण-1: शोध-यात्रा (नवंबर 2023 से जनवरी 2024)”

सर्वप्रथम, मैं परम पूज्य स्वामी जी के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता एवं सादर नमन व्यक्त करती हूँ, जिनके करुणामय मार्गदर्शन, प्रेरणादायी सान्निध्य एवं आशीर्वाद से मुझे मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) जैसे सार्वभौमिक, यथार्थपरक एवं मानव-केंद्रित दर्शन को समझने और अपने जीवन में आत्मसात करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। उनके सान्निध्य में ‘जीवन विद्या’ के माध्यम से स्वयं, परिवार, समाज तथा प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण, समाधान-युक्त एवं मूल्यनिष्ठ जीवन जीने की मेरी दृष्टि विकसित हुई। यह अनुभव मेरे लिए केवल वैचारिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक और जीवन-परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ है।

Certificate Program in Consciousness Development and Value Education (2023-2024) के अंतर्गत आत्मीय विश्वविद्यालय की मानव-केंद्रित शिक्षा-दृष्टि, समग्र विकास एवं सही समझ पर आधारित शैक्षणिक वातावरण ने मेरे बौद्धिक ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन को भी एक नई दिशा प्रदान की है।

“कैसे और क्यों की पूर्ति (उत्तर) ही समाधान है”

इस प्रमाणपत्र कार्यक्रम के अंतर्गत किए गए असाइनमेंट्स मेरे शोध-जीवन के प्रथम चरण का आधार बने। मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्व) पाठ्यक्रम की शुरुआत श्री ए. नागराज द्वारा उठाए गए मूलभूत प्रश्नों से होती है, जिनमें ब्रह्म, बंधन-मोक्ष, ज्ञान के प्रामाणिक स्रोत, तथा आधुनिक समाज एवं संविधान में विद्यमान विरोधाभासों पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्ययन के दौरान जीवन के बल - मन, बुद्धि, आत्मा और शक्ति - आशा, विचार, इच्छा एवं ज्ञान के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से समझने का अवसर मिला। साथ ही, भौतिकवाद एवं आदर्शवाद की सीमाओं को पहचानते हुए, मध्यस्थ दर्शन को एक संतुलित, वैज्ञानिक एवं मानव-हितैषी विकल्प के रूप में समझा गया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि मानव समस्याओं का समाधान केवल भौतिक संसाधनों या भावनात्मक आस्थाओं से नहीं, बल्कि सही समझ और जागृति से संभव है।

इस पाठ्यक्रम का केंद्रीय सिद्धांत सह-अस्तित्व है, जिसके अनुसार संपूर्ण अस्तित्व - जड़ और चैतन्य नित्य वर्तमान है तथा परस्पर पूरक रूप में विद्यमान है। मैंने प्रकृति की चार अवस्थाओं - पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था के साथ-साथ विकास-क्रम एवं जागृति-क्रम को समझा, जिससे मानव विकास की सही दिशा स्पष्ट हुई। जड़ और चैतन्य के भेद, जीवन को गठनपूर्ण परमाणु (चेतना इकाई) के रूप में समझना, तथा मानव को चेतना के स्तर के आधार पर पहचानना, इन अवधारणाओं ने जीवन के उद्देश्य को नए दृष्टिकोण से देखने में सहायता की।

“सर्व मंगल की कामना के बिना स्वयं का मांगल्य सिद्ध नहीं है”

इस चरण में भ्रांत चेतना के कारण उत्पन्न शोषण, हिंसा, युद्ध, संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन की गहन आलोचनात्मक व्याख्या ने यह स्पष्ट किया कि वर्तमान वैश्विक संकटों का मूल कारण अपूर्ण जीवन-दृष्टि है। यह समझ मेरे शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार सिद्ध हुई।

पाठ्यक्रम के अगले भाग में मानवीय मूल्यों एवं आचरण पर विशेष बल दिया गया। स्थापित मूल्य (कृतज्ञता, प्रेम, सम्मान), शिष्ट मूल्य (सौम्यता, सरलता, उदारता), आधार मूल्य एवं पूर्ण मूल्य, तथा मानव मूल्य एवं जीवन मूल्य (सुख, शांति, संतोष, आनंद) की स्पष्ट व्याख्या ने यह समझ विकसित की कि मूल्य केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यवहार में उतरने योग्य जीवन-सूत्र हैं।

चरित्र, नीति (धर्म-नीति, राज्य-नीति, अर्थ-नीति) और न्यायपूर्ण व्यवहार को सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला के रूप में समझा गया। सहमति और स्वीकृति, स्नेह और प्रेम, तथा अच्छा लगना और अच्छा होना - इन सूक्ष्म भेदों ने मेरे दैनिक व्यवहार को अधिक सजग, संतुलित और मूल्यनिष्ठ बनाने की प्रेरणा दी।

अंततः, 'विकल्प' पुस्तक के अध्ययन के माध्यम से एक मानव-केंद्रित, मूल्य-आधारित शिक्षा-व्यवस्था का स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त हुआ, जिसका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति और परिवार को समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व की दिशा में अग्रसर करना है। यह दृष्टि मेरे लिए केवल अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि शोध और जीवन दोनों की दिशा निर्धारित करने वाला आधार बनी।

“साधन को साध्य समझना ही अज्ञान है”

इस प्रथम चरण से मैंने यह सीखा कि सह-अस्तित्व ही परम सत्य है और मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि जागृति-युक्त, मूल्यनिष्ठ और समाधान-आधारित जीवन है। इस चरण ने मेरी शोध-दृष्टि को गहराई, आत्मचिंतन को स्पष्टता, सोच को संतुलन तथा आचरण को उत्तरदायित्व प्रदान किया।

यह चरण मेरे लिए केवल शोध-यात्रा की शुरुआत नहीं, बल्कि सही समझ के साथ जीवन जीने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा का सशक्त प्रारंभ सिद्ध हुआ है।



“जो जैसा है उसे वैसा ही समझ लेना विद्या है”



डॉ. विजयकुमार दांडवाणी

जीवन विद्या अध्ययनार्थी एवं प्रैक्टिशनर,
CVMS Cell , आत्मीय विश्वविद्यालय

“अस्तित्व के नियम”

हम सभी यह जानते हैं कि अस्तित्व में कुछ नियम निश्चित रूप से कार्य करते हैं। ये नियम हमारे मानने या न मानने से नहीं बदलते, बल्कि निरंतर और समान रूप से लागू रहते हैं। उदाहरण के लिए गुरुत्वाकर्षण का नियम। इस नियम के अनुसार कोई भी वस्तु ऊपर से नीचे की ओर आकर्षित होती है। जब पेड़ से सेब टूटता है, तो वह हमेशा नीचे ही गिरता है, ऊपर की ओर कभी नहीं जाता। यह एक अटल नियम है।

अब यह पूरी तरह हमारे ऊपर है कि हम इस नियम को मानें या न मानें। लेकिन यदि हम इसे न भी मानें, तो भी सेब का ऊपर की ओर जाना संभव नहीं है। हमारे मानने या न मानने से नियम में कोई बदलाव नहीं आता। हाँ, नियम को न मानने की स्थिति में हम स्वयं भ्रमित या दुखी हो सकते हैं, जैसे यह सोचना कि “मैं गुरुत्वाकर्षण को नहीं मानता, फिर भी सेब ऊपर क्यों नहीं जा रहा?”। यहाँ समस्या नियम में नहीं, बल्कि हमारी समझ में होती है।

“पर गुण गणना अभ्यास से स्वदुर्गुणों का नाश होता है”

एक और महत्वपूर्ण नियम है सुविधा और संबंध के बीच प्राथमिकता का नियम। अस्तित्व का यह स्पष्ट नियम है कि संबंध की प्राथमिकता सुविधा से अधिक होती है। जब भी हम सुविधा को संबंधों से ऊपर रखते हैं, तब हम भीतर से असंतोष और दुख का अनुभव करते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति केवल अपने लाभ, आराम या सुविधा के कारण रिश्तों की उपेक्षा करता है, तो भले ही उसे बाहरी सुविधा मिल जाए, भीतर का सुख स्थायी नहीं रहता। इसके विपरीत, जब हम संबंधों को प्राथमिकता देते हैं, तब जीवन में संतुलन और स्थायी सुख का अनुभव होता है।

ऐसे ही जीवन से जुड़े अनेक नियम अस्तित्व में कार्य कर रहे हैं। इन नियमों को जानना, समझना और स्वीकार करना हमें **निरंतर सुखपूर्वक जीवन जीने की दिशा में मार्गदर्शन देता है**। जैसे भौतिक नियमों को समझकर हम विज्ञान और तकनीक में प्रगति करते हैं, वैसे ही जीवन के नियमों को समझकर हम अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

अस्तित्व के इन नियमों की समझ हमें यह सिखाती है कि दुख का कारण बाहर नहीं, बल्कि नियमों की अवहेलना या अज्ञानता है। जब हम अस्तित्व के साथ सामंजस्य में जीते हैं, तब जीवन सरल, सहज और सुखद बनता है।

“मानव की जागृति बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि के लिए है”

इसीलिए सूत्र है “नियम का विरोध ही दुःख है”

बिंदु	स्थायी सुख	अस्थायी सुख
अर्थ	भीतर से अनुभव होने वाला, लंबे समय तक बना रहने वाला सुख	बाहरी कारणों से मिलने वाला, थोड़े समय तक रहने वाला सुख
आधार	सही समझ, सही संबंध, संतुलित जीवन	पैसा, वस्तु, पद, सुविधा, भोग
समयावधि	निरंतर और स्थिर	क्षणिक और बदलने वाला
निर्भरता	दूसरों या परिस्थितियों पर निर्भर नहीं	परिस्थितियों और वस्तुओं पर निर्भर
समाप्त होने पर प्रभाव	शांति और संतोष बना रहता है	खालीपन, असंतोष और नई चाह
उदाहरण	परिवार में विश्वास, प्रेमपूर्ण संबंध, आत्मसंतोष	नया मोबाइल, बोनस, पदोन्नति, प्रशंसा
पाने का तरीका	समझ बढ़ाने से, संबंधों को प्राथमिकता देकर	पाने-खोने की दौड़, तुलना और प्रतिस्पर्धा से
जीवन पर प्रभाव	स्थिरता, सहजता, आनंद	तनाव, चिंता, अस्थिरता
अस्तित्व से सामंजस्य	अस्तित्व के नियमों के अनुरूप	अस्तित्व के नियमों के विरुद्ध

अधिक जानकारी और गहन चर्चा के लिए हमारे साथ जुड़े रहिए। यदि आपको इस विषय पर और अधिक जानकारी चाहिए, तो आप CVMS Cell, Atmiya University से संपर्क कर सकते हैं।

“जीवन ज्ञान स्वयं में विश्वास का आधार है”

ARTICLE - 4



A Transformative Journey: Reflections on the 40-Day Chetna Vikas Mulya Shiksha- based Internship



Gautam R. Makdiya

B.Tech - IT (Sem - 8)

Atmiya University

Vivek P. Solanki

B.Tech - IT (Sem - 8)

Atmiya University

The 40-Day (5th Feb to 17th March, 2026) Chetna Vikas Mulya Shiksha Internship (Madhyasta Darshan-based), organized as a thoughtful initiative by CVMS Cell, FoTE, Atmiya University at A. Nagraj Manviya Shikshan Shodh Kendra, Parda (Maharashtra),

We can say with clarity that this experience has been far more than a structured program it has been a gradual and meaningful transformation in the way we understand and live our day-to-day lives.

“सबके कल्याण चिन्तन से प्रतिभा का विकास होता है”

We began this journey with certain expectations: to observe how the principles of Darshan are reflected in daily conduct, to bridge the gap between what we had understood intellectually and what we actually practice, and to refine our way of thinking and expression.

However, as the days progressed, the experience moved beyond these expectations and brought a deeper shift in perspective.

One of the most significant aspects of this initiative is its integrated learning approach. Activities such as farming, cattle care, cooking, production processes, and managing daily responsibilities were not treated as separate tasks, but as essential components of learning itself.

Through active participation, we were able to see profession not merely as a means of earning, but as responsible participation in a larger system. This holistic exposure gave depth and practicality to our understanding.

“जब कमाते हैं, तब गंवाते नहीं; जब गंवाते हैं, तब कमाते नहीं”

Another important realization for both of us was the shift from external evaluation to self-evaluation. In this environment, responsibility was not assigned but naturally accepted, and expression was not something to be prepared, but something that emerged from clarity.

This brought a sense of authenticity in our actions and interactions, making learning more personal and meaningful.

The discipline observed here was also unique. It was not imposed through rules or authority, but reflected in the consistent conduct of individuals.

This created an atmosphere where alignment happened naturally, without pressure. Over time, we found ourselves becoming more attentive, responsible, and aware in our own behavior.

Internally, the changes were gradual yet noticeable. Both of us experienced an increased awareness before reacting, an improvement in listening, and a growing ability to observe our own patterns, especially those driven by ego.

“विचारक व्यवस्था का पोषक है; शासक व्यवस्था का शोषक है”

While confusion did not disappear completely, it reduced significantly, bringing with it a sense of stability. Concepts like Sukh and Shanti, which once felt theoretical, began to connect with our experiences Sukh in moments of clarity and alignment, and Shanti in the reduction of inner conflicts.

Our understanding of relationships also deepened during this journey. Observing interactions in a value-based environment made it clear that relationships are sustained not by expectations or control, but by responsibility and right understanding.

This was especially evident while interacting with younger students, coordinating in teams, and being part of a collective living system.

The experience also helped refine our understanding of needs and contentment. In an environment where simplicity and sufficiency were lived naturally, comparison reduced, and clarity about what is truly required became sharper. Santosh (contentment) started to feel more defined, not as an idea but as a practical way of living.

“स्वयम् की अक्षमता का प्रदर्शन ही क्रोध है”

While Anand is still an evolving understanding, there were moments especially during immersive activities like farming where we felt a sense of effortless participation and alignment.



“असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता, अभय ही क्लेश से मुक्ति और हर्ष के लक्षण हैं”

List of Activities

List of Activities Performed by CVMS Cell Members (Jan to March, 2026)

Type of Activity	Facilitator	Dates
5-Day Student SIP	Jaykumar Patel	05th to 09th Jan, 2026
		27th to 31st Jan, 2026
	Jigar Ratnottar	05th to 09th Jan, 2026
		19th to 23rd Jan, 2026
	Dr. Vijaykumar Dandwani	05th to 09th Jan, 2026
		16th to 20th Feb, 2026
	Vishal Chhanya	05th to 09th Jan, 2026
Gujarat Kshetriya Sammelan, Surat	Chetnaba Gohil	10th to 11th Jan, 2026
	Jaykumar Patel	
	Dr. Vijaykumar Dandwani	
	Vishal Chhanya	

List of Activities

Parents Meet	Jaykumar Patel	07th Feb, 2026
	Dr. Vijaykumar Dandwani	28th Feb, 2026
1-Day JV Parichay Shibir	Jaykumar Patel	16th Jan, 2026 & 23rd Feb, 2026
Exclusive SIP for Lower Attendance Students		16th to 20th Feb, 2026
Orientation Session for Hostel Students	Ankit Kalariya	23rd Feb, 2026
	Jaykumar Patel	27th Feb, 2026
Mentor-Mentee Session for SoDS Faculty Members	Ankit Kalariya	04th & 11th Feb, 2026
5-Day Workshop on Permanent		09th to 13th March, 2026
JV Workshop at Juvenile Court, Rajkot	Vishal Chhanya	2nd to 7th March, 2026

List of Activities

JV Workshop at Atmiya Vidyalay, Baroda	Jaykumar Patel	14th to 15th March, 2026
JV Workshop at Revival Academy, Baroda		
JV Workshop at Trivedi & Associates Industry, Nana Foflia		
JV Workshop at Saurashtra Leva Patel Community, Gorva - Baroda		
JV Workshop at New Sarvamangal School, Sama - Baroda		
JV Workshop for Community, Bhavnagar	Jaykumar Patel & Chetnaba Jhala	19th March, 2026
JV Workshop at KJIT, Savli - Vadodara	Jaykumar Patel	28th March, 2026



WORKSHOP: G. G. ZADAFIYA
SCHOOL, SURAT (BENEFICIARIES 175)



STUDENT INDUCTION PROGRAM
(EVEN SEMESTER, AY 2025-26)



WORKSHOP: VISHWAMANGALAM
- ANERA, HIMMATNAGAR
(BENEFICIARIES 170)



PARTICIPATION IN KSHETRIYA
SAMMELAN, 2026 AT SURAT



JV-LED SHIBIRS AT BARODA
(BENEFICIARIES 250)



JV WORKSHOP AT JUVENILE
COURT, RAJKOT
(BENEFICIARIES 35+)



JV-LED EXCLUSIVE WORKSHOP
FOR EMPLOYEES AT KJIT, SAVLI
(BENEFICIARIES 100)

DESIGNED BY



VIREN BHADESHIYA

B.Tech Information Technology
Atmiya University , Rajkot



NANDITA JAYSWAL

B.Tech Computer Science Engineering
Atmiya University , Rajkot



पूज्य बाबा श्री ए. नागराज जी

कर्नाटक प्रांत के जन्में श्री अग्रहार नागराज ने सन १९५०-१९७५ 'अज्ञात को ज्ञात' करने अमरकंटक (म.प्र.) में साधना किया। साधना-समाधि-संयम विधि से उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व का दर्शन हुआ, चैतन्य रूपी परमाणु 'जीवन' के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान हुआ।

उन्हें 'सहअस्तित्व रूपी' यथार्थता, वास्तविकता एवं सत्यता अंतिम सत्य के रूप में समझ आया, अस्तित्व में वे अनुभव पूर्वक "जागृत" हुए। जिसे मानव के सम्मुख उन्होंने एक नए दर्शन – 'मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' के रूप में प्रस्तुत किया है।

भूमि स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।

धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ॥



Volume: I Issue No.: 01
Year: March, 2026

